SOMAMRT G.K.V.

ओ३म्

सोमामृत

कवयित्री
श्रीमती विद्यावती देवी
(ऋतम्भरा वानप्रस्था)
आनन्द कुटीर ज्वालापुर (उ० प्र०)

प्रथम बार १०००
मूल्य ४० पै०

कार्तिक संवत् २०२६
नवम्बर सन् १९६९

प्रकाशक—
पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड
आनन्द कुटीर
ज्वालापुर उ० प्र०

मुद्रक—
पं० राधेश्याम कीर्तिपाल
(फोन ५७) ज्वालापुर उ० प्र०

आवश्यक सूचना—कृपया पृष्ठ १३ पं० १० में 'हंस' के स्थान पर 'इस' पृ० १५ पं० ७ में 'रमें' के स्थान पर 'रोम से' तथा पृ० २६ पं० ३ में 'दिशि दिन' के स्थान पर 'निशि दिन' पढ़ें। ले०

ओ३म्

सुरभित सुमन

रक्खे निज सह-धर्मिणी,
के हार्दिक उद्‌गार ।
उनके श्रद्धा सुमन के,
गूंथे सुरभित हार ॥

भक्त जनो तुम प्रेम से,
करो इसे स्वीकार ।
हो पवित्र कर लो सदा,
दलित पतित उद्धार ॥

सोमामृत तय्यार है,
करलो इसका पान ।
वेदों का स्वाध्याय कर,
करो देव गुण-गान ॥

आनन्द कुटीर
ज्वालापुर, उ० प्र०
१६-११-६६

सम्पर्क-
धर्मदेव विद्यामार्तण्ड
(देवमुनि वानप्रस्थ)

ओ३म्

भजन सूची

पृष्ठ

ओ३म्

ओंकार उपासना

अव—रक्षण गति कांति प्रीति तृप्ति अवगम प्रवेश स्वाम्यर्थ याचना, क्रियेच्छा दीप्त्यवाप्त्यालिङ्गन हिंसा दान भागवृद्धिषु ॥ पाणिनीय धातु पाठे, अवतीति ओम्

रक्षण— जो सारे जग की है जननी,
उस माँ को हम कैसे भूलें ?।
क्यों न उसके आश्वासन से,
झूलन में हम निशिदिन झूलें ॥
जो सबका रक्षण करती है,
और सब दुरितों को हरती है।
जो सद्भावों से भरती है,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ॥

गति— जो गति जगत् को देती है,
दुर्मति सभी हर लेती है।
जो ज्ञान में स्नान कराती है,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ॥

कांति— जो अपनी मनोहर कांति से,
सबकी कमनीय है बनी हुई।
जिसकी चाह से सब चाह मिटे,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ।।

प्रीति— जो अपने प्रेम के प्याले से,
सन्तों को सोम है पिला रही।
जिसको पीकर सब अमर बने,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ।।

तृप्ति— जिसकी प्रीति में तृप्ति है,
जिस तृप्ति में वह शक्ति है।
जो राक्षस ऋषि बना देवे,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ।।

अवगम— (ज्ञान) जो अपने अवगम के बल से,
दानव को देव बना देवे।
जो कुटिलों को भी सरल करे,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ।।

प्रवेश— जिसमें प्रवेश हो जाने से,
आदेश नये नित मिलते हैं।
जिनसे भ्रम भय सब दूर भगें,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ।।

श्रवण— जो श्रवण करे सबके दुःख को,
जो सब रोगों की औषध है।
जो राग द्वेष से मुक्त करे,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ॥

स्वामित्व—जो सारे जग की स्वामिनी है,
जो घट घट अन्तर्यामिनी है।
जो यम नियमों से विमल करे,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ॥

याचना— जिस याचना से निष्काम बनें,
जिस काम से मोक्ष का धाम मिले।
जिस माँग से मंगल हो जाए,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ॥

क्रिया— क्रिया जिसकी अद्भुत है जग में,
जिसे देख ऋषि मुनि चकित हुए।
और नेति नेति कह हार गए,
उस माँ को हम कैसे भूल ? ॥

इच्छा— जिसकी इच्छा के करने से,
हो जाएँ वासना दग्ध सभी।
मन निष्कलंक निर्द्वन्द्व बने,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ॥

दीप्ति— जिसकी दीप्ति की प्राप्ति ही,
अवाप्ति मानो उसका है मधुर मिलन ।
जिसके संस्पर्श से हर्ष बढ़े,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ।।

आलिङ्गन— सच्चा आलिंगन है वह ही,
सत्य न्याय दया समा जाए,
जिससे आनन्द का कोष खुले,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ।।

हिंसा— जिसकी हिंसा हिंसक मारे,
जो हिंसा हंस बना देवे ।
जो मार से सबको संवारती है,
उस मां को हम कैसे भूलें ? ।।

दान— क्यों न ऐसी पूर्ण मां पर,
तन मन धन सब बलिदान करें ।
जिस दान से ज्ञान के नयन खुलें,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ।।

भाग— जो भाग सौभाग्य बढ़ा देवे,
जो भाग वैराग्य करा देवे ।
जिस भाग से भोग का रोग मिटे,
उस माँ को हम कैसे भूलें ? ।

वृद्धि— जिसके सुमिरन से सिद्धि हो,
जिसके सुमिरन से वृद्धि हो।
जिसकी भक्ति से मुक्ति हो,
उस मां को हम कैसे भूलें ? ॥

मेरा परित्याग न करना

मा न इन्द्र परावृणग् भवा नः सधमाद्ये ।
त्वं न ऊती त्वमिन्न आप्यं, मा नइन्द्र परावृणक् ॥

सामः २६०

विनय यही मेरी मां जी,
मेरा परित्याग नां करना ।
मेरी उलझन को सुलझाना,
मेरा परित्याग नां करना ॥

रुलाना अपने विरह में,
हँसाना अपने दर्शन में ।
धुलाना धूल सब मेरी,
मेरा परित्याग नां करना ॥

चलाना चाल अपनी ही,
बताना बात अपनी ही ।
कराना अपनी ही करनी,
मेरा परित्याग नाँ करना ॥

बिठाना संग अपने ही,
चढ़ाना रंग अपना ही ।
सुनाना वेद की वंशी,
मेरा परित्याग नां करना ॥

पिलाना अपना सोमामृत,
खिलाना ग्रास गायत्री ।
जलाना वासना सारी,
मेरा परित्याग नां करना ॥

सुलाना अपने सिमरन में,
जगाना अपनी ज्योति में,
लगाना हृदय से अपने,
मेरा परित्याग नां करना ॥

प्रभु कब प्यार करते हैं ?

यः सोमः कलशेष्वा अन्तः पवित्र आहितः ।
तमिन्दुः परिषस्वजे ॥ साम० १२००

वेद हमको बताता है,
प्रभु कब प्यार करते हैं ।
जो श्रद्धा से प्रभु चरणों में,
नित नमस्कार करते हैं ॥

जो सत्पुरुषों के सत्संग से,
हैं सत् को धारण कर लेते ।
उठा कर प्यार से उनको,
हृदय से वे लगाते हैं ॥

जो वेदाज्ञा का कर पालन,
करें गुण ईश्वर के धारण ।
उन्हीं की साधना सच्ची,
का वे विस्तार करते हैं ॥

जो अपनी मैं के बिन्दु को,
मिला देता उस सिन्धु में ।
वह सुन्दर भेंट अरपन की,
सदा स्वीकार करते हैं ॥

न करना मुझको दूर

मा नो वधीरिन्द्र मा परा दाः ॥

तुझ सा मैंने कोई न देखा,
मम नयनन के नूर ।

अपने दिव्य गुणों से मुझको,
कर देना भरपूर ॥

ज्ञान निधि के चोरों को,
कर देना चकनाचूर ।

जिसकी रक्षा में हो जाएं,
रोग शोक काफूर ।

चिपटी रहूं सदा उन चरणों में,
मैं बन चरणन की धूल ॥

हृदय मेरा सूर्य बन जाए

अहं सूर्य इवाजनि

मोह निशा का नाश करे,
निज तेज से चमकाए ।। हृदय०

चहुं दिशि छिपे हुए असुरों के,
छक्के छुड़वाए ।। हृदय०

अपने दिव्य गुणों से मुझको,
दिव्य बना जाए ।। हृदय०

देख देख कर जिसको मेरा,
प्राणेश्वर हर्षाए ।। हृदय०

उदय अस्त दोनों में,
सम रहना मोहिं सिखलाए ।।हृदय०

सोमामृत पीकर पहिले,
औरों को पिलवाए ।। हृदय०

मैं नदिया बन जाऊँ

ज्ञान कर्म के तट दोनों,
पत्थर के बनवाऊँ ।
इधर उधर भटकूं न जिससे,
सीधा सुमार्ग पाऊँ ॥
जान सकूं मैं भेद खेद के,
सत्य ज्ञान पाऊँ ।
कर्म करूं निष्काम मैं,
कमलाकार ही बन जाऊँ ।
भक्ति रस में बहती बहती,
सागर में मिल जाऊँ ॥
जाऊँ समा ऐसी उसमें,
कहीं दीखने न पाऊँ ॥

अस्माकमस्तु केवलः

मेरा तू ही तू है तू

मैं केवल तेरी हूँ

सब देख लिया जग मैंने

हर वस्तु तुझे बखाने

मैं भी गुण गाती रहूं ॥

नहीं दीखा कोई तुझ सम

जो हर लेवे सारा तम

तुझ सूर्य की किरण बनूं ॥

तेरा गुर गायत्री माता

जिसमें संसार समाता

उसमें ही सनी रहूं ॥

मेरा तू ही तू है तू ॥

उश्मसि त्वा सधस्थ आ

मां रखियो मेरी लाज

अपने करुणा रूपी कर से,
रक्षा करियो आज ॥
तुझको सम्मुख रखने से ही,
सुधरें सारे काज ॥
अपना ही कर देकर मुझ को,
नां करना मोहताज,
तू ही मेरे हंस जीवन का,
केवल एक जहाज ॥

मैं तेरी ही तो हूँ

मुझ पर भी करुणा करना,
मैं तेरी ही तो हूँ ॥ ध्रुव

अपराध क्षमा सब करना,
मैं तेरी ही तो हूँ ॥

२ तेरी जो अमृत वर्षा,
देवों पर बरस रही है।

मुझ पर भी तो बरसाना,
मैं तेरी ही तो हूँ ॥

३ संसार की हर वस्तु में,
तुम्हीं तो बसे हुए हो।

मेरी नस नस में बस जाना,
मैं तेरो ही तो हूं ॥

---

४ तेरी जो सुन्दर हंसी,
हंसों को हंसा रही है।

मोहि हंस बना हंसाना,
मैं तैरी ही तो हूं ॥ ध्रुव

समर्पण

अहंकार करें अरपन अपना।
भगवान् तुम्हारे चरणों में ॥

हम तुमको सदा रहें भजते,
और हृदय से सदा रहें खिलते।
हर रोम रमे रहें नमते,
भगवान् तुम्हारे चरणों में ॥

हममें तुममें है भेद यही,
हम सत्चित् तुम सच्चिदानन्द हो।
हम आनन्द पाने को आएं,
भगवान् तुम्हारे चरणों में ॥

ऐसी पुकार हम कर पाएं,
ये नयनन नदियां बन जाएं।
सिसकत सिसकत लिपटत जाएं
भगवान् तुम्हारे चरणों में ॥

जागरण

भगवान् जगाता है जिसे,
वह ही जग सकता है।
भगवान उठाता है जिसे,
वह ही उठ सकता है॥

नहीं शक्ति कोई अपनी जो,
उस ईश को अपनाए।
जिसका निर्मल मन हो जाता,
उसका बन जाता है॥

उसकी करुणा बिन कोई,
न मार्ग सरल सूझे।
जो मैं मेरे को भस्म करे,
उसमें रम जाता है॥

वह साथी बनता है उसका,
जो सत्य को वर लेवे।
निशिदिन उसको अपना,
अमृत जल पान कराता है॥

वह धन्य हुआ जग में जो कि,
जननी को जान सके।
जिसका आश्रय पाने से ही,
सब कुछ मिल जाता है॥

नक्येवं यथा त्वम् ॥ साम २०३

मैं किससे करूं पुकार,
तेरे बिना ऐ मां जी ।
मेरा कोई नहीं आधार,
तेरे बिना ऐ मां जी ॥

देख लिया सारा जग मैंने,
कोई दिल का दर्द न जाने ।
न कोई करे उपचार,
तेरे बिना ऐ मां जी ॥

तेरे जैसा न कोई दानी,
देकर भी जो निरभिमानी ।
देखा न कोई उदार,
तेरे बिना ऐ मां जी ॥

जिनको भी था समझा अपना,
वह तो था केवल इक सपना।

है सब संसार असार,
तेरे बिना ऐ मां जी ॥

मैंने सबका हृदय टटोला,
तेरे जैसा न कोई भोला।

न मिला किसी से प्यार,
तेरे बिना ऐ माँ जी ॥

मधुमन्मे निक्रमणम् ॥ अथर्व०

है निर्मल जिह्वा दीनी, इसको न दाग़ लगाऊँ ॥

ओ३म् ओ३म् ही गाऊँ,
सदा ओ३म् ओ३म् ही गाऊँ।
तन काला पर यह नहीं काली,
देखो इसकी शान निराली।
मैं सत्य से इसे सजाऊँ,
इसको न दाग़ लगाऊँ ॥

बोल सदा यह ऐसे बोले,
खल के भी जो ताले खोले।
इसे ऐसा सोम पिलाऊँ,
इसको न दाग़ लगाऊँ ॥

शत्रु मित्र बनाऊँ इससे,
रोतों को हँसाऊँ इससे।
ऐसा मैं वर पाऊँ,
इसको न दाग़ लगाऊँ ॥

जगे इसी से ज्ञान की ज्योति,
मिले इसी से नाम का मोती ।
गीत प्रात से गाऊँ,
इसको न दाग़ लगाऊँ ॥

सत्य मधुर रस को टपकावें,
चहुँ दिशि शान्ति को फैलावे ।
मधु मक्खी बन जाऊँ,
इसको न दाग़ लगाऊँ ॥

आत्म सुधार

भगवान के न्याय को,
यदि कोई विचारे ।
सुधरे नहीं संसार,
बिना अपने को सुधारे ॥

कितने ही करें ध्यान,
चाहे कितने ही ज्ञान सुनें ।
जब तक न सधाया मन,
न लगेपु नावक किनारे ॥

आशीर्वाद मिलता है उसे,
जो निशि दिन शीश नवावे ।
कर कर के ऋचाओं का मनन,
नस नस को पखारे ॥

मैं अपने प्यारों को तो,
हूँ चारों पदार्थ देता ।
पर दिव्य गुणों की कोई,
यदि मेरी नकल उतारे ॥

———

तेरा सुमिरन

मेरा निशिदिन माँ जी,
तेरे सुमिरन में बीते।
रहुँ निरत सदा मैं तुझ में,
तव गुण गाते गाते ॥
जीवन की हर घटना में,
तव नव प्रकाश मैं पाऊँ।
कर मुक्त मुझे बन्धन से,
मेरे जीते जीते ॥
तव भक्ति रस में ही मैं,
नस नस को अपनी सींचूं।
मेरे सम्मुख रहे सदा तू,
सब कुछ करते करते ॥
संसार का प्यार तू ही है,
मेरा आधार तू ही है।
तुझ में ही समा जाऊँ मैं,
सोमामृत पीते पीते ॥

सच्चा भक्त

हमें ऐसा भक्त बना दो,
दीन दयाल हरी ।

अपने सम समझें हम सबको,
ऐसे नयन बना दो, दीन दयाल हरी ॥

तेरे ही हम स्तोत्र सुनें सब,
ऐसे श्रोत्र बना दो, दीन दयाल हरी ॥

मानस में पारस बन आ जा,
स्पर्श से स्वर्ण बना दो, दीन दयाल हरी ॥

नाम बिना लागे सब नीरस,
ऐसी रसना बनादो, दीन दयाल हरी ॥

योगिराज प्रभु आश्रित जी महाराज

योगिराज ने लाल लुटा दिये ।
लूटने वालो लूट लो ॥

नव जीवन के साधन बता दिये ।
लूटने वालो लूट लो ॥

यह साधना वह तलवार है,
जिसमें शत्रु की हर दम हार है ।
घर बैठे ही योद्धा बना दिये,
लूटने वालो लूट लो ॥

यह साधना ऐसा लाल है,
जिसका चमत्कार कमाल है ।
जिसने बूढ़े से बाल बना दिये,
लूटने वालो लूट लो ॥

यह साधना वह संजीवनी है,
जो जीव में डालती जीवनी है ।
जिसने सदियों से सोते जगा दिये,
लूटने वालो लूट लो ॥

यह साधना ऐसी सीख है,
जो मांगती नहीं भीख है ।
जिसने रंक से राजा बना दिये,
लूटने वालो लूट लो ॥

प्रभु गुण गान

आओ रल मिल सारे,
प्रभु गुण गाएं।

जिसकी महिमा गा गा कर के,
सारे ऋषि मुनि हारे॥

जो अपनी करुणा दृष्टि से,
पतितों को भी तारे।

शुद्धान्तः करण से जो कोई,
उसको सुमिरन करता॥

जीवन्मुक्त बना कर उसके,
त्रिविध ताप है हरता।

हर घटना में जो कोइ उसका,
सुन्दर रूप निहारे॥

अपने कर कमलों से उसके,
पाँचों शत्रु मारे।

नाम महिमा

नस नस में मेरी माँ जी,
तव नाम समा जाए।
जो अन्त समय में मेरी,
रसना रस बरसाए ॥

मेरे पाँचों प्राणों पर,
तेरा ही वास रहे।
जो अनायास ही तेरा,
सुमिरन होता जाए ॥

मेरे सारे अंगों पर,
तेरा संस्पर्श रहे।
जो हर्ष से मेरा रोम रोम,
रोमाञ्चित हो जाए ॥

तेरा सुमिरन ही मेरा,
आश्वासन बना रहे।
जो मेरी इस रग रग को,
तेरे में रंग जाए ॥

भगवत्कृपा

मेरे हृदय में तो मेरा, भगवान् आ गया ।
अपनी करुणा का परिचय,
अपने आप दे गया ॥
सदियों से रो रही थी,
मैं जिसके विरह में ।
चुपके से आ कर के मेरे,
आँसू पुंछा गया ॥
निर्धन निर्बल थी बनी हुई,
जिस ज्ञान धन बिना ।
होकर दयाल मुझको,
मालोमाल कर गया ॥
मेरे ही ज्ञान सागर में,
गोता लगा रहे ।
होना नहीं निराश,
आश्वासन दिला गया ॥
मुझ सूर्य के प्रकाश में ही,
तुम सदा रहना ।
कहते हुए ऐसे कवच, अपना पहिना गया ।

प्रभु प्रार्थना

ऐ वसुदेव मेरे ,
नस नस में मेरी वास करो ।
जितने दुःख दर्द हैं ,
मन के मेरे नास करो ॥

हृदय में तेरी हो ,
प्रतिमा से मुझे प्रीत रहे ।
सत्य और तप की ,
परीक्षा में मुझे पास करो ॥

ओ३म के नाम से ,
हर रोम यह रोमांचित हो ।
आस तेरी का मेरे ,
हर श्वास में विश्वास रहे ॥

है यही कामना ,
यही याचना यही प्रार्थना है ।
करके करुणा मेरे ,
सब दुर्गुणों का नाश करो ॥

पूर्णिमा

मुझको पूर्ण बनादो प्रिय पूर्णिमा।
जिससे मिल जाए मुझको मेरी पूर्ण माँ ॥

जिसकी पूर्णता से आज पूर्ण हुई,
उससे मेरी भी कमियों की धो कालिमा।
जिसकी ज्योति से तू जग मगा है रही ॥
उसकी लाली से मुझ में भी ला लालिमा।

जिसकी महिमा से तू है मनोहर बनी,
ऐसी रमणीया माँ से मिला पूर्णिमा।
जिसकी लीला से तू खिल खिला है रही ॥
उसको मुझसे परे न हटा पूर्णिमा ॥

शरणागति

छोड़ संसार का प्यार,
ईश शरण मोहि आना पड़ा ।

जब कि हर बात के घात का,
गात को दुःख उठाना पड़ा ॥

स्वार्थ वश कोई,
सत्य को सुनता नहीं ।

हँस बन कोई,
मोती को चुगता नहीं ॥

इसलिये ईश के आगे,
ही शीश अपना झुकाना पड़ा ।

अज्ञान ने ज्ञान का नाश किया,
सत्य न्याय दया का न राज्य रहा ॥

इस लिए माँ को भी,
अपना वह रुद्र रूप दिखाना पड़ा ॥

वेद महिमा (चौपाई)

वेद वंशी जहाँ दिशिदिन बाजे।
वहीं मोद प्रमोद विराजे ॥
दोनों लोक परलोक सुधारे ।
करे कमल वत् जल से न्यारे।
भेद खेद सब वेद मिटावे ।
सम्मुख सच्चिदानन्द ले आवे ॥
अद्भुत अनुपम वेद की गाथा।
करत मनन नम जाए माथा ॥
हर अक्षर में वह ही दीखे ।
सरल सौम्य कोई विरला सीखे।
गुण अनन्त ईश्वर के गाए।
ग्रहण करे जो वह तर जाए ॥
तीनों ताप संताप मिटाए ।
तदनुकूल आचरण बनाए ॥
गीत पुनीत संगीत यही है ।
अन्त समय का मीत यही है ॥
आत्म सुधार इसी से होवे।
जन्म जन्म के जो मल धोवे ॥

भव सागर की यह ही तरणी ।
महिमा जा सो जाए न वरणी ॥

सत्य ज्ञान यह ही सिखलाए ।
हृदय हरी का घर बन जाए ॥

पीकर वेदामृत के प्याले ।
बन जाओ निर्मल और निराले ॥

चहुं दिशि इसका राज्य फैलाओ ।
ऋषियों का ऋण यहीं चुकाओ ॥

पठन मनन आचरण जहाँ है ।
ईश्वर रहता सदा वहाँ है ॥

सत्य न्याय दया जहाँ समाए ।
वहीं दयामय दौड़ा आए ॥

दिव्य रूप अपना दिखलाया ।
जो सब भक्तों के मन भाया ॥

एक शब्द के अर्थ घनेरे ।
श्रद्धा सहित जपो सांझ सवेरे ॥

धन्य धन्य उसकी प्रभुताई ।
दिया वेद में रूप दिखाई ॥

भगवदिच्छा

मेरी इच्छा में ही छिपी,
सब की भलाई है।
यह बात मेरी मात ने,
मुझको बताई है ॥
जिस चिन्ता में तू रात दिन,
व्याकुल बनी रहती है।
कई जन्मों की संचित,
तेरी ही तो कमाई है ॥
यदि न्यायकारी होकर भी,
मैं न्याय न करूँ।
तो आस्तिकों की हो जाती,
बिलकुल सफ़ाई है ॥
मेरी दया और न्याय,
सदा साथ देखना।
न्याय से दिया कष्ट,
दया से दी दवाई है ॥
इक हाथ दया का है,
न्याय का दूसरा।
पर मोहावरण में,
नहीं देता दिखाई है ॥

मम त्वमेव

मम त्वमेव त्वमेव त्वमेव ॥

सर्वे वेदास्त्वां गायन्ति
सर्वे मुनयस्त्वां नन्दन्ति
नहि कोऽप्यस्ति यथा त्वम् ॥

इह त्वमेव रमणीयम्
इह त्वमेव वरणीयम्
"न कि इन्द्र त्वदुत्तरम् ॥"

इह त्वमेव कमनीयम्
इह त्वमेव नमनीयम्
त्वामेवाहं नमेयम् ॥



माँ का मधुर स्मरण

जिस सुन्दर माँ के मधुर स्मरण में,
गुज़रे सुबह और शाम मेरा।
उस जगदम्बा माँ के चरणों में,
हो साष्टांग प्रणाम मेरा॥

बिन दिखे दिवाकर के केवल,
है कोमल कमल कुम्हला जाता।
पर दिव्या रमणीया माँ बिन,
दिल ही मेरा निकला जाता॥

वह जहान की क्या जहाँ जाल न हो,
वह गान ही क्या जहाँ ताल न हो।
वह हाल हलाहल तुल है हिय,
जिस पर माँ मेरी दयाल न हो॥

जैसे हो जीवन जीव बिना,
जैसे कोई कर्म हो ज्ञान बिना।
ऐसी ही निशि दिन निर्धन मैं,
अपनी जननी के ध्यान बिना॥

जैसे शरीर हो चर्म बिना,
जैसे नारी हो शर्म बिना ।
जैसे नर हो शुभ कर्म बिना,
जैसे साधक धनी धर्म बिना ॥

जैसे चकोर की चक्षु सदा,
चन्द्रमा की चमक में रहती है ।
जैसे चातक की चटक मटक,
वर्षा की बूंद में बसती है ॥

जैसे उस भ्रमर की नजर सदा,
बस कमल विमल में बसती है ।
जैसे चकवी चकवे की चाह,
दिनकर के दरस में तरसती है ॥

वैसे यह विह्वल विकल हिय,
माँ के विरह में विलख रहा ।
मन मंदिर में माँ की प्रतिमा को,
निमख निमख है निरख रहा ॥

हो जाएं नयन ये बंद चंद,
बिन देखे रूप सरस तेरा ।
रसना का रस नहीं रहा रसिक,
बिन पीये अमृत रस तेरा ।

ऐ प्राणन प्यारी महतारी,
छिन छिन निशि दिन धरूं ध्यान यही ।
इन पतितपावन पदपंकजों में,
पा जाए दुहिता स्थान कहीं ।।

यही भिक्षा भिखारिन मांगती है,
करतार मेरे भर्तार मेरे ।
अपने चित की चित्रावली में,
चिपका लेना चमत्कार मेरे ।।

तात मेरे पितु मात मेरे,
भूलोक मेरे भूषण मेरे ।
मुझे चरण शरण में रखना सदा,
भूल के सब दूषण मेरे ।।



सौ दर्द की दवा

सौ दर्द की दवा है इक ओ३म् नाम तेरा ।
पुलकित हो कह रहा है, हर रोम रोम मेरा ॥

तेरी ही शक्ति से,
बनी है सारी ओषधियाँ
पर काम करती हैं तभी,
जब हो इशारा तेरा ।

तेरे ही ज्ञान बल से, धन्वन्तरि बने
पर सफल होते हैं वही
जो करते ध्यान तेरा ॥

कण कण में तेरी महिमा
का गान हो रहा है ।
पर सन्त सुनते हैं वही
जिनको है ज्ञान तेरा ॥

वैदिक सेहरा

मित्रो मिल कर हर्ष से, करो सुमंगल गान ।
गावो गुण गण नाथ के, जो मुद मंगल खान ॥

जिस मंगलमय की करुणा से, यह मंगलोत्सव मना रहे ।
उस जग जननी का कर सर पर, सुन्दर सुपूत के बना रहे ॥

देखो मन मोहन के मुख पर, यह सेहरा कैसे सुहाय रहा ।
छबि देख देख देव गण भी, है मन्द मन्द मुसुकाय रहा ॥

मानो यह फूल बरसाते हुए, यह शुभ संदेश सुनाए रहे ।
फूलो फलो इन फूलन की तरह, सरसाए हुए हर्षाय रहे ॥

यह मोती हीरे जटित माल, गल लाल के ऐसे सुहाय रही ।
लख लालायित होवें लाखों, लालों की लालिमा लाज रही ॥

मन भावन की यह मुक्त माल, सब मन के मैल है धुला रही ।
मिथ्याभिमान का मोह तजा, सच्चे मालिक से मिला रही ॥

मणि मोती ज्योति से अपने, सारे जग को जगमगा रहे ।
हीरे हर रहे हृदय सबके, हैं हंस हंस के हंसा रहे ॥

मानो अपने मोहन के लिए, हरि से हैं मांग वरदान रहे ।
रहती सृष्टि तक मोहन का, यह हरा भरा उद्यान रहे ॥

उपभोग करे इस उपवन का, करते हैं जैसे जल में कमल ।
रहे अचल सदा यह चित चंचल, चाहे अमृत भी जाए मिल ॥

करना विहार संसारासार में, सीखो इन हंसों से तुम ।
सत्कर्मों से हो स्नेह सदा, पापों में कभी न फंसो तुम ॥

ऐसा यह सुखद सुवर वर हित, हैं सभी हितैषी चाह रहें ।
चमके चहुँ दिशि चांदनी सहित, बन सबका शाहन्शाह रहे ॥

विनय यही जगदीश से,
हम सबकी है आज ।
सुखदायी सबके लिए,
होवे यह शुभ काज ॥



आनन्द कुटीर ज्वालापुर से प्रकाशित और प्राप्तव्य पुस्तकें

आचार्य धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत

१. महापुरुषकीर्तनम्—उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत भाषानुवाद सहित संस्कृत काव्य।

अजिल्द २)००
सजिल्द २)२५

२. महिलामणिकीर्तनम—उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत

अजिल्द २)५०
सजिल्द ३)००

३. साम संगीत सुधा—सामवेद के १२० मन्त्रों का पद्यानुवाद

मूल्य)५०

४. Mahatma Buddha-an Arya Reformer 2nd Ed.

Price 1.75

५. Hymns of the Same Veda Sanhita—
English Translation with Notes & Comments.
About 950 Pages. Price 15.00

मुद्रक : अजन्ता इलै० प्रिंटिंग प्रेस (फोन ५७) ज्वालापुर।